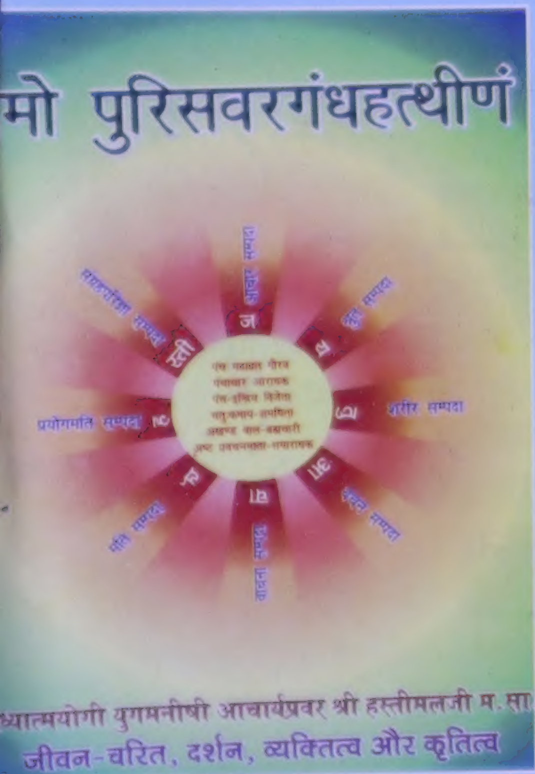
चार्य श्री हस्ती जीवन स्वाध्याय प्रतियोगिता

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित,
दर्शन, व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाशित

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ

र आधारित घर बैठे स्वाध्याय परीक्षा पर आकर्षक पुरस्कार योजना



? लगभग

600

प्रश्न

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले को

100000 रु

का **बम्पर पुरस्कार**

एवं सैंकड़ों विविध अन्य पुरस्कार

न पुस्तिका के वितरण का शुभारम्भ	13 जनवरी 2006 (पौष शुक्ला चतुर्दशी, आचार्य श्री हस्ती का जन्म दिवस)
न पुस्तिका वितरण की अंतिम तिथी	6 सितम्बर 2006, बुधवार (भादवा शुक्ला चतुर्दशी–अनन्त चतुर्दशी)
ीघ्र प्रतियोगियों हेतु उत्तर पुस्तिका मा कराने की अंतिम तिथी	5 नवम्बर 2006 (कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, लोकाशाह जन्म दिवस)
र पुस्तिका जमा करवाने की तिम तिथी	2 जनवरी 2007 (पौष शुक्ला चतुर्दशी आचार्य हस्ती का जन्म दिवस)
रिणाम घोषणा की प्रस्तावित तिथी	29–4–2007 अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ला तीज, आचार्य श्री के आचार्य पद आरोहण की जयन्ति)

आचार्य श्री हस्ती दर्शन पर
खुली किताब स्वाध्याय प्रतियोगिता

- आयोजक -

अखिल भारतीय श्री रत्न हितैषी श्रावक संघ,
सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर 342001
दूरभाष - 2636763, 2641445, 2624891, 2630690

संयोजक	उप संयोजक	महामन्त्री
चंचलमल चोरडिया	डॉ. धर्मचंद जैन	नवरतन डागा
फोन 2621454 (निवास)	संपादक जिनवाणी	फोन 2654427(नि)
94141-34606(मो.)	फोन 2730081	98280-32215(मो.)

सहयोगी संस्थाएं

1. श्री सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल , जयपुर - फोन 2575997
2. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर - फोन 2624891, 9414126279
3. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न शिक्षण बोर्ड, जोधपुर फोन 2630490
4. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मंडल , जोधपुर
5. अखिल भारतीय श्री जैन युवक परिषद - जोधपुर - फोन 2641445

निर्णायक मण्डल

1. श्री कृष्णमल जी लोढा (पूर्व न्यायाधीश रा.उ.न्यायालय)-जोधपुर
2. जसराजजी चौपड़ा (पूर्व न्यायाधीश रा.उ.न्यायालय)-जयपुर
3. श्री रंगरूपमलजी कोठारी (सेवा निवृत आई.ए.एस.)-जोधपुर
4. डॉ श्रीमती सुषमाजी सिंघवी (निदेशक भगवान महावीर खुला विश्वविद्यालय)-जयपुर
5. डॉ. रामगोपालजी (सेवानिवृत निदेशक, रक्षा प्रयोगशाला)-जोधपुर
6. डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत (संघ संरक्षक एवं अध्यक्ष श्री रत्न हितैषी श्रावक संघ,जोधपुर
7. श्रीमति सुशीलाजी बोहरा (अध्यक्ष सम्यग ज्ञान प्रचारक मंडल-जयपुर)
8. श्री प्रसन्नचंदजी बाफना (सदस्य रत्नसंघ शासन सेवा समिति) -जोधपुर

विश्व की रक्षा के लिए शस्त्रधारी सेना की अपेक्षा शास्त्रधारी सेना की अधिक आवश्यकता है। यदि संयमधारी सेना मजबूत नहीं होगी तो देश की आध्यात्मिक रक्षा नहीं होगी। मानसिक विकार, आध्यात्मिक रोग, वैर विरोध, कलह और अनीति के हमले से बचाने वाली सेना संयमधारी ही है।

(आचार्य श्री हीरा चन्द्रजी म.सा. की दीक्षा प्रसंग पर - आचार्य श्री हस्ती के प्रवचन से संकलित - कार्तिक शुक्ला षष्ठी वि.सं. 2020)

मेरे अन्तर भया प्रकाश

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश,
काल अनन्त रुला भव वन में, बंधा मोह के पाश।
काम–क्रोध, मद, लोभ भाव से बना जगत का दास॥1॥ मेरे..॥

तन धन परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश।
पुद्‌गल को अपना कर मैने किया स्वत्व का नाश॥2॥मेरे..॥

रोग–शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शांतिमय मैं हूँ मेरा, अचल रुप है खास॥3॥मेरे..॥

इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास।
अस्थि मांस मय अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास॥4॥मेरे..॥

ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश॥5॥मेरे..॥

मोह मिथ्यात्व की गांठ गले जब, होवे ज्ञान प्रकाश।
गजेन्द्र देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश॥6॥मेरे..॥

आत्म शोधन के लिए प्रधान रूप से दो साधन हैं–साधना के उच्चतर भूमि पर पहुंचे हुए महापुरुषों की जीवनियों का आन्तरिक निरीक्षण और उनके उपदेशों का चिन्तन। साधना की जिस पद्धति का अनुसरण कर उन्होंने आत्मिक विशुद्धि प्राप्त की और फिर लोक–कल्याण हेतु अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से प्रकट किया, साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए यही दोनों मार्ग उपयोगी हो सकते है। (**आचार्य श्री हस्ती की डायरी से**)

आचार्य श्री हस्ती (गजेन्द्र) जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता क्यों?

पुरिसवरगंधहत्थीणं आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के जीवन चरित, दर्शन, व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ है । आचार्य प्रवर श्री एक महान् अध्यात्मयोगी, अप्रमत साधक, गहन विचारक, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक प्रज्ञाशील युग प्रभावक आचार्य थे। मात्र 8 वर्ष की लघुवय में अनुपम वैराग्य , 10 वर्ष की आयु में दीक्षा, मात्र 15 वर्ष की आयु में गुरु द्वारा भावी आचार्य पद पर मनोनयन, लगभग उन्नीस वर्ष की आयु में विधिवत आचार्य पद आरोहण , इकसठ वर्ष से भी अधिक संघ के दायित्व का निर्मल, सफल निर्वहन संलेखना सहित 71 वर्ष तक निर्मल संयम साधना का पालन , जीवन की सांध्यवेला में संथारा पूर्वक पूर्ण सजगता के साथ समाधिमरण, आपके जीवन के भव्य कीर्तिमान थे। सामायिक और स्वाध्याय आपकी प्रबल प्रेरणाएं रही । साधना और विद्वता का आपमें अद्भुत समन्वय था। वस्तु के सदुपयोग, एकाग्रता व सजगता में वे कुशल थे।

सदैव मुस्कान युक्त चेहरा, ब्रह्मचर्य से दीप्त नयन, अप्रमत दिनचर्या, प्राणिमात्र के प्रति करुणा व मैत्री, गुणियों के प्रति प्रमोद भाव, प्रतिकूलता में माध्यस्थ भाव, ज्ञान क्रिया का बेजोड़ संगम आपके जीवन की अनुपम विशेषताएं थी। अध्ययन, वाचन, चिंतन, मनन, स्वाध्याय , मौन, ध्यान उनके जीवन की धुरी बन गये थे और उन सबकी परिधि में थी जनकल्याण की भावना । **आपकी मान्यता थी कि सम्प्रदाय सेना की बटालियनों की भांति व्यवस्था का अंग है। आप सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद एवं तेरे मेरे के घेरे से सदैव परे रहे। वे स्वयं कहा करते थे - जब तक इस सफेद चदरिया में दाग नहीं है तब तक हर क्षेत्र एवं प्रत्येक श्रावक हमारा अपना है।**

प्रवचन में भाषा के आडम्बर की अपेक्षा भावों के सम्प्रेषण पर आपका विशेष लक्ष्य रहता । आप सत्य, हितकारी व निरवद्य वचन की अभिव्यक्ति में सदैव निर्भिक रहते थे। अत्यल्प शब्दों में अपनी बात प्रस्तुत करना भी आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। **अन्धविश्वास, अशिक्षा और अज्ञान से ग्रसित परन्तु विज्ञान के कारण सुख सुविधाओं के लिए लालायित इस युग के लोगों को क्षमतानुरूप एवं समयानुकूल धर्म बोध देने में आप सिद्ध हस्त थे।**

ऐसे महापुरुष के जीवन संस्मरणों, घटनाओं , विशेषताओं आचार संबंधी

आदर्शों , प्रेरक प्रसंगों को पढ़कर वर्तमान पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कर अपना जीवन निर्माण कर सके तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिये विरासत के रूप में सुरक्षित सौंप सकें, **इस पावन उद्देश्य हेतु 900 से अधिक पृष्ठों वाले इस प्रामाणिक ग्रन्थ का जन जन को स्वाध्याय कराने हेतु इस योजना का आचार्य श्री हस्ती के 95 वें जन्म दिवस पोष शुक्ला चतुर्दशी, दिनांक 13 जनवरी 2006 से शुभारंभ किया जा रहा है।** इस ग्रन्थ पर आधारित 600 प्रश्नों का पाठकों को घर बैठे ग्रन्थ पढ़कर पोष शुक्ला चतुर्दशी 2 जनवरी 2007 तक उत्तर भिजवाने की ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है । सभी प्रश्नों का उत्तर इसी ग्रन्थ में से ही लिखना है। इस परिक्षा में बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री एवं पुरुष भाग ले सकते हैं।

पुस्तक का वास्तविक मूल्य रू.250/- है परन्तु प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को प्रोत्साहन स्वरूप पुस्तक मात्र रू. 100/- में दी जा रही है । पुस्तक जन-जन तक सुलभता से पहुंचायी जा सके एवं डाक व्यय न लगे इस हेतु देशभर में विक्रय केन्द्र खोलने हेतु सम्पर्क कर प्रयास किया जा रहा है । कुछ सम्पर्क सूत्र इस परिपत्र में भी प्रकाशित किये जा रहे हैं। आप प्रधान कार्यालय अथवा अपने नजदीक के सम्पर्क सूत्र से सम्पर्क कर अन्य समीपवर्ती केन्द्रों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में विक्रय केन्द्र प्रारम्भ कर इस स्वाध्याय अनुमोदना योजना में भागीदार बनना चाहें तो प्रधान कार्यालय से सम्पर्क करने का कष्ट करावें।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की अब स्मृतियां ही शेष हैं । उनके जीवन के प्रसंग, उपदेश, संदेश एवं अनुभूति पूर्ण चिन्तन आज भी हम सबके लिये अमूल्य निधि हैं, जो हमारा मार्ग दर्शन कर सकते हैं। उनका जप, तप, संयम, ध्यान व साधना साधकों के लिए मार्गदर्शक है। **आपकी तेजस्विता, अप्रमत्तता, एकाग्रता, सजगता, निस्पृहता, समता, श्रमशीलता, प्रशान्तता, सुमनष्कता, सरलता, निरभिमानता, करुणार्द्रता आदि गुणों में से कोई भी गुण पाठक वर्ग ग्रहण कर पाया तो इस योजना का आयोजक मण्डल अपने श्रम को सार्थक समझेगा।** इसी मंगल भावना से ओत प्रोत इस ग्रन्थ के स्वाध्याय का पुनः पुनः विनम्र अनुरोध करता हूं।

डॉ. धर्मचंद जैन	**चंचलमल चोरडिया**
उप संयोजक	संयोजक
नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं	नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं
खुली किताब प्रतियोगिता	खुली किताब प्रतियोगिता

आचार्य प्रवर हस्ती का प्रेरणास्पद जीवन

विद्वता, प्रज्ञा और साधना की त्रिपुटी के आदर्श आचार्य श्री हस्ती का जन्म पौष शुक्ला 14 विक्रम संवत् 1967 दिनांक 13 जनवरी 1911 को मारवाड़ के पीपाड़ शहर में हुआ। जब आप माता रूपा की कुक्षि में थे तभी पिता केवलचन्दजी काल कवलित हो गए। माता के वैराग्य संवृक्त विचारों , ननिहाल में महामारी कारण एक के बाद एक 11 सदस्यों की मृत्यु के कारण बालक हस्ती में वैराग्य के बीज अंकुरित होते गये। शिक्षा गुरु बाबाजी श्री हरकचन्दजी से प्रभावित बालक हस्ती ने माता रूपा देवी के साथ अजमेर में माघ शुक्ला 2 संवत् 1977 को 10 वर्ष 18 दिन की वय में आचार्य श्री शोभाचन्दजी म.सा. के शिष्यरूप में प्रवज्या अंगीकार की।

सर्वविध योग्यता के कारण गुरुदेव आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने 15 वर्ष की वय में आपको भावी संघ नायक मनोनीत कर दिया था। आप लगभग 19 वर्ष की वय में जैन धर्म के श्वेताम्बर स्थानकवासी रत्न संघ के सप्तम पट्टधर के रूप में संघनायक बने।

70 वर्ष से अधिक के साधु जीवन में आपने राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा कि धरती को अपने पदरज से पावन करने के साथ ओसवाल, पोरवाल , पल्लीवाल एवं अग्रवालों को ही नहीं अपितु जाट, गुर्जर, अहीर, विश्नोई, राजपूत, माली, धोबी, हरिजन, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई आदि जातियों के लोगों को भी निर्व्यसनी एवं सदाचारी बनने की प्रेरणा की। लोगों को धर्म एवं अध्यात्म से जुडने हेतु स्वाध्याय और सामायिक का प्रायोगिक साधन दिया। स्वाध्याय के माध्यम से विचार शुद्धि एवं सामायिक के द्वारा आचार शुद्धि के उपाय की महिमा सर्वत्र फैली।

पूज्य श्री और गजेन्द्रचार्य के नाम से विख्यात आचार्य श्री हस्ती साधारण सी देह में एक असाधारण आध्यात्मयोगी एवं उच्च कोटि के साधक सन्त थे। कई घंटों तक बिना सहारे एक आसन में बैठे रहने की क्षमता, विहारकाल में स्फूर्ति पूर्वक ईर्या समिति सम्मत पाद्-निक्षेप, निरालसतापूर्वक श्रमणाचार की प्रत्येक क्रिया में पराक्रम आदि अनेक गुण आपकी आध्यात्मिक ऊर्जा के ही प्रतीक थे। **प्रातः जागरण से लेकर रात्रि विश्राम के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग आपकी जीवनचर्या का अंग बन चुका था।** स्वर विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र का भी

आपको अच्छा अनुभव था। भौतिक जगत की चमक आपकी उद्दीप्त साधना के समक्ष फीकी एवं व्यर्थ प्रतीत होती थी। लोक में प्रतिष्ठित प्रोफेसर, इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक, न्यायाधिपति, उद्योगपति, जौहरी, व्यवसायी, एडवोकेट आदि सभी आपके चरणों में नत मस्तक थे तथा आपसे आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त कर प्रमोद का अनुभव करते थे। श्रमण मर्यादानुसार आपके द्वार सभी के लिये सदैव खुले रहते थे । **साधारण से साधारण व्यक्ति पर भी आपकी वही कृपादृष्टि थी, जैसी समाज के अग्रगण्य लोगों पर एवं सम्पर्क में आने वाले सत्ताधीशों पर रहती थी।**

आपने धर्म को पोशाक की भांति नहीं, अपितु जीवन - सुधार के आधार पर समझने की प्रेरणा दी।

अप्रमत्तता, निःस्पृस्ता, निरभिभानना, निर्भयता, मित्त भाषिता, गुणियों के प्रति प्रमोद भाव, प्राणि मात्र के प्रति करुणा भाव आदि अनेक गुणों से आपकी साधना तेजस्वी एवं दीप्तिमान थी। **स्वाध्याय, ध्यान, मौन, प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, शास्त्र - वाचना आदि सभी क्रियाएँ आप निश्चित समय पर एवं सजगतापूर्वक करते थे।** आपकी अप्रमत्तता आत्म स्वरूप के स्मरण पूर्वक अन्तरंग से जुड़ी हुई थी। आप मौन साधना में विराजे हुए भी दर्शक के अन्तर्हृदय में प्रेरक बनकर बोलते थे।

अन्धी मान्यताओं में जकड़े एवं तनावग्रस्त मानव समाज के लिये आपने ज्ञान व आचरण का पथ स्वाध्याय एवं सामायिक के रूप में प्रशस्त किया।

नारी - शिक्षा व सदाचरण की महत्ती प्रेरणा, युवकों में धर्म के प्रति आकर्षण व समाज - निर्माण में उनकी शक्ति के सदुपयोग को एक दिशा, समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों यथा - आडम्बर, वैभव - प्रदर्शन, दहेज - माँग आदि पर करारी चोट, विभिन्न ग्राम नगरों में व्याप्त कलह एवं मन मुटाव के कलुष का प्रक्षालन, समाज में कमजोर तबके एवं असहाय परिवारों को साधर्मि-वात्सल्यपूर्वक सहयोग की प्रेरणा आदि अनेक कार्यों ने आपको युग मनीषी व युग प्रभावक महान आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया।

समकालीन सन्त - प्रवरों से आपके मधुर संबंध रहे। **आगम महोदधि आचार्य प्रवर श्री आत्मारामजी म.सा. प्रायः अपने पत्रों में आपको 'पुरिसवरगंधहत्थीणं' विशेषण से अलंकृत किया करते थे। हस्तियों में गंधहस्ती की भांति वे पुरुषों में श्रेष्ठ महापुरुष थे। 'मनस्येकं वचस्येकं कर्मस्येकं महात्मनाम्" मन, वचन एवं कर्म तीनों में एकता रखने वाले उन महापुरुष से हर एक प्रभावित था।**

विनम्रता , गुणग्राहकता , निरभिमानता आप में जीवन्त रूप में थे। **पूज्य आचार्य श्री मन्नालालजी म.सा.** के साथ आपने मन्दसौर में छेदसूत्रों की वाचना सुनने के पश्चात लिखा — 'आपका बहुमान पूर्ण वात्सल्य कभी भूलाया नहीं जा सकता। आपके साथ छेद सूत्रों की वाचना और प्राचीन सन्तों के जीवन के खट्टे - मीठे अनुभव सुने। श्रमण विहार में नित्य उपयोगी कई नवीन बातें सीखी।' आप **आचार्य श्री जवाहर लाल जी म.सा.** के विचारों एवं प्रवचनकला से भी बहुत प्रभावित थे। आप ही के शब्दों में - 'आपके विचारों एवं प्रवचन कला से मन अत्यधिक प्रभावित हुआ। आप जो कुछ भी कहते थे, बहुत सरल एवं मीठास भरे शब्दों में कहते और हृदयपटल पर उसका चित्र खींच देते थे। आपके अनुभवपूर्ण विचारों से भी जीवन में बड़ी प्रेरणा मिली, बल प्राप्त हुआ।' आपने **पूज्य श्री अत्मारामजी म.सा.** से नियमित ध्यान की प्रेरणा ग्रहण की तथा स्वाध्याय की अभिरुचि को दृढ़तर किया। **प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा.** की स्वाध्याय संघ की प्रवृत्ति को अपनाकर आगे बढ़ाया। जयमल जी म.सा. की सम्प्रदाय के **श्री चौथमलजी म.सा.** के संथारे पर निर्धारित विहार को स्थगित कर उनको सथारे में **"मेरे अन्तर भया प्रकाश", मैं हूँ उस नगरी का भूप", "समझों चेतन जी अपना रूप"** जैसे शरीर और आत्मा के भेदज्ञान की प्रेरणा देने वाले वैराग्यप्रद भजनों की रचना कर सुनाया। **स्थानकवासी संत ही नहीं मन्दिरमार्गी , तेरापन्थी, वैष्णव, रामस्नेही आदि अन्य परम्पराओं के संत जो भी आपके सम्पर्क में आते, उनके साथ आत्मीयता का व्यवहार रखते।**

आपने अनेक क्षेत्रों में सामाजिक विवादों, वैमनस्यों को दूर कर सौहार्द का वातावरण उपस्थित किया। आप प्रायः फरमाया करते थे - **'समाज में एक - दूसरे पर विश्वास आवश्यक है। शरीर में आँख की गलती से कभी पैर में कांटा चुभ जाय तो क्या पैर आंख पर भरोसा नहीं करेगा? और क्या आँख पैर का कांटा निकालने में सहयोग नहीं करेगी?**

आपके विचारों से श्रावक संघ श्रमण संघ का सहयोगी है। अतः श्रावक संघ में भी अनुशासन रहे, तभी संगठन मजबूत हो सकता है । श्रावक मात्र आलोचक या बातूनी नहीं होना चाहिए। जबानी जमा खर्च या टीका टिप्पणियों से समाज का हित नहीं हो सकता। गोपनीय कार्यों की सुरक्षा यहां तक हो कि कार्य से पहले पड़ौसी भी आपके विचार को नहीं समझ सके। अधिक करके थोड़ा कहने की नीति को सदा ध्यान में रखा जाये । समाज हित के लिये सबकी एक आवाज हो और शासन हित में सर्वस्व न्योछावर की तैयारी हो, तब ही श्रमण संघ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

विशुद्ध आचार परम्परा के वे हिमायती थे। संगठन में मूल लक्ष्य एक समाचारी का हो । आचार निष्ठा संघ संचालन का आधार हो । इसी भावना के साथ आपने सादड़ी साधु सम्मेलन में श्रमण संघ के संगठन में सम्मिलित होने की स्वीकृति प्रदान की थी। **साधु सम्मेलनों में आचार्य श्री का चिन्तन जैन धर्म को जन धर्म बनाने, श्रमण जीवन में विशुद्ध शास्त्रीय स्वरुप की पुनः संस्थापना करने, सम्पूर्ण श्रमण - श्रमणी वर्ग को समान आचार, विचार, व्यवहार और समान समाचारी के एक सुदृढ सूत्र में सुसंबंध करने, पर्वाराधन आदि के सभी विभेदों को समाप्त कर एक सूत्रता में लाने, श्रमण - श्रमणी और श्रावक-श्राविकाओं को एक सूत्र में आबद्ध कर जैन संघ को सुगठित , सुदृढ़ , अभेद्य एवं अनुशासन बद्ध बनाने तथा उसे पुरातन प्रतिष्ठित पद पर पुनः स्थापित करने के व्यवहारिक उपाय खोजने पर केन्द्रित रहता था।**

देह त्याग का समय सन्निकट जानकर सर्वविध संयोगों से अपने को पृथक् कर लिया। आपने समस्त आचार्यों, श्रमणों, श्रमणियों, अपने अन्तेवासी शिष्यों, शिष्याओं , श्रावकों, श्राविकाओं एवं 84 लाख योनियों के समस्त जीवों से क्षमायाचना करते हुए, अपने को पुनः पंच महाव्रतों में आरूढ़ किया। संघनायकों, विशिष्ट जनों को अभिष्ट हित प्रेरणा देकर आप संघ के ममत्व एवं दायित्व से भी अपने आपको अलग कर लिया।

आचार्य श्री द्वारा सभी प्रमुख संत, सतियों की सेवा में प्रेषित क्षमायाचना के भाव इस प्रकार थे **'मैं जीवन के संध्याकाल में चल रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य उतना स्वस्थ और समीचीन नहीं चल रहा है । संयम जीवन के पिछले कई वर्षो से मेरा आपसे प्रत्यक्ष - परोक्ष रूप से निकट सम्पर्क व प्रेम सौहार्द संबंध रहा है। कई बार मिलने एवं विचार विमर्श के प्रसंग भी आए हैं । इस बीच न चाहते हुए भी मेरे किसी व्यवहार से आपको व आपके अन्तेवासी किसी संत अथवा सती वृन्द को कोई कष्ट हुआ हो तो मैं, आत्म शुद्धि हेतु हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ।"**

आपकी छवि एक आध्यात्मिक विद्वान् सन्त के रूप में रही। गांव निमाज, जिला पाली (राजस्थान) में वैशाख शुक्ला अष्टमी संवत् 2048 दिनांक 21 अप्रेल 1991 को **आपका तेरह दिवसीय तप संथारा जिन उच्च आध्यात्मिक भावों के साथ सम्पन्न हुआ, वह एक आचार्य के लिये शताब्दियों में भी विरल एवं अप्रतिम उदाहरण हैं,** जिसकी महक युगों युगों तक जगत् को सुवासित करती रहेगी ।

क्यों पढ़ें नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ ?

1. अपने जीवन का निर्माण करने हेतु ।
2. वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान खोजने हेतु ।
3. जीवन में ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने हेतु ।
4. मानसिक विकारों के शमन हेतु ।
5. शान्ति, सन्तोष एवं आनन्द की प्राप्ति हेतु ।
6. आत्म शक्ति एवं आत्म विश्वास के अभिवर्द्धन हेतु ।
7. वर्तमान जीवन को तनावरहित व सुखी बनाने हेतु ।
8. संघ व समाज के प्रति अपने दायित्व को समझने हेतु ।
9. आदर्श साधु जीवन को जानने हेतु ।
10. साधना में तेजस्विता लाने हेतु ।
11. संसार में रहते हुए निर्लिप्त बनने हेतु ।
12. जीवन की कठिनाइयों में समाधान ढूंढने हेतु ।
13. संयम एवं तप - त्याग का प्रभाव जानने हेतु ।
14. निर्भयता, निरभिमानता, अप्रमत्तता आदि गुणों का महत्त्व जानने हेतु ।
15. जीवन - सुधार के साथ मरण - सुधार हेतु ।
16. अनासक्ति योग की साधना हेतु ।
17. संसार में अपनी उपयोगिता जानने हेतु ।
18. गुणियों के प्रति प्रमोद भाव जागृत करने हेतु ।
19. साम्प्रदायिक अभिनिवेश से ऊपर उठने हेतु ।
20. क्षमा, सरलता, सहिष्णुता के साथ मधुर व्यवहार बढाने हेतु ।
21. पुरस्कार प्राप्ति हेतु ।

आचार्य श्री हस्ती के विचारों की झलक

» *समाज में एकता तभी तक रह सकती है जब तक परस्पर सहिष्णुता का भाव हो। आज विविध परम्परा के लोग जब एक जगह धर्म क्रिया करने बैठते है, तब भिन्न भिन्न प्रकार की नीति - रीति देखकर टकरा जाते हैं, वाद विवाद मे पड़ जाते हैं, जबकि धार्मिक मंच तो सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने का प्रमुख स्थान होता है ।* **जब लोकसभा में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा, साज - सज्जा बोलचाल और नीति रीति के व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं, तो फिर लम्बी और चौड़ी मुंहपती वाले प्रेमपूर्वक एक साथ क्यों नहीं बैठ सकते ?**

» *आपने परिग्रह का परिमाण करने पर बल देने के साथ अनीति एवं अन्याय से धन कमाने को अनुचित बतलाया। परिग्रह में आप प्रायः दो बातों का उल्लेख करते ।* **परिग्रह का दूसरा नाम दौलत है, जिसका अर्थ है 'दो लत' अर्थात दो बुरी आदतें। उन दो लतों में पहली लत है हित की बात न सुनना और दूसरी लत है गुणी , नेक, सलाहकार और वन्दनीय व्यक्तियों को आदर न देना।'** *परिग्रह हिंसा को छोड़कर नही रहता और हिसा से ही परिग्रह बढ़ता है । हिंसा और परिग्रह में मित्रता है, दोनों का आर्थिक गठजोड़ है । दोनों ऐसे भयंकर रोग हैं जो हमारी चेतना शक्ति को विकास का मौका नहीं देते ।*

» *सद्‌गुणों की समाज में प्रतिष्ठा करने के लिए उनका स्पष्ट मत था - मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए न कि मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।'* ***विरोधियों को जीतने के लिए न तो कषाय भाव बढ़ाने की आवश्यकता है और न भौतिक शस्त्रों की। उनको जीतने के लिये तो शान्ति के शीतल वचन ही सक्षम होते हैं - जो विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोधी को भी जीत लेते हैं।'***

» *'देश के नैतिक बल की रक्षा एवं संवर्धन के लिए आप शस्त्रधारी सेना की नहीं, शास्त्रधारी सेना की आवश्यकता, प्रतिपादित करते थे -* **शस्त्रधारी सेना देश का धन बचा सकती है, पर शास्त्रधारी सेना जीवन बचाती है, क्योंकि हिंसा, झूठ, चोरी, व्याभिचार, भ्रष्टाचार शस्त्रबल से नहीं, शास्त्रबल से छूटते हैं।**

» *समस्त पापों, तापों और सन्तापों से मुक्ति पाने का मार्ग है — अनुभव दशा को जागृत करना, स्वानुभूति के सुधा-सरोवर में सराबोर हो जाना, निजानन्द*

में विलीन हो जाना, आत्मा का आत्मा में ही रमण करना । जीवन में जब यह स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो आत्मा देह में स्थित होकर भी देहाध्यास से मुक्त हो जाता है और फिर कोई भी सांसारिक सन्ताप उसका स्पर्श नहीं कर सकता । जगत् की कोई भी वेदना उसे व्याकुल नहीं बना सकती ।

» जीवन में जो भी विषाद, दैन्य, दारिद्रय, दुःख और अभाव है, उस सबकी अमोघ औषध सामायिक है । सामायिक से समभाव की प्राप्ति होती है । समभाव वह लोकोत्तर रसायन है, जिसके सेवन से समस्त आन्तरिक व्याधियाँ एवं वैभाविक परिणतियाँ नष्ट हो जाती हैं। आत्मारूपी निर्मल गगन में जब समभाव का सूर्य अपनी समस्त प्रखरता के साथ उदित होता है तो राग , द्वेष, मोह आदि उलूक विलीन हो जाते हैं। आत्मा में अपूर्व ज्योति प्रकट हो जाती है और उसके सामने आलोक ही आलोक प्रसारित हो उठता है।

» अगर आप अपने आभ्यन्तर में रही अमोघ शक्ति, जो प्रच्छन्न रूप से विद्यमान है, उसे पहचानना चाहते हैं, प्रकट करना चाहते हैं, तो शुद्ध और एकाग्र मन से नित्यप्रति नियमित रूप से स्वाध्याय कीजिए। मन के कलुष या क्लेश को मिटाने में, समाज में व्याप्त बुराईयों , बीमारियों को समाप्त करने में, मानसिक दुःखों को मूलतः विनष्ट करने में और आत्मा पर लगे कर्म मैल को पूर्णतः ध्वस्त कर, आत्मा को सच्चिदानन्द शुद्ध स्वरूप प्रदान करने में सक्षम अमोघ शक्ति स्वाध्याय ही है। अतः स्व-पर कल्याणकारी स्वाध्याय का अलख जगाइए।

» सामायिक मुख्यतः आचार - प्रधान साधना है । पर यह आचार क्रियाकाण्ड बनकर न रह जाये, अतः इसके साथ ज्ञान अर्थात् स्वाध्याय का जुड़ना आवश्यक है । आप इस बात का ध्यान रखें कि आपकी सामायिक दस्तूर की सामायिक न होकर साधना की सामायिक हो। लौकिक कामनाओं से प्रेरित होकर सामायिक का अनुष्ठान न किया जाय, वरन् कर्मबंध से बचने के लिए, संवर की प्राप्ति के लिए सामायिक का आराधन करना चाहिए।

» परमात्मा का जो शुद्ध, बुद्ध, वीतरागतामय स्वभाव है, वही मेरा स्वभाव है । कर्मों के आवरण ने मेरे स्वभाव को ढक रखा है, दृढ़ संकल्प के साथ मुझे आवरण दूर कर अपना शुद्ध स्वरूप प्राप्त करना है । काम-क्रोध - लोभ - मोह मेरा स्वभाव नहीं है । **मैं दृढ़ता से निश्चय करता हूँ कि कैसी भी परिस्थिति हो, मुझे काम, क्रोध, लोभादि के अधीन नहीं होना है । जब भी प्रसंग आएगा मै दृढ़ता से विकारों का मुकाबला करूंगा।**

(54 **वें जन्म-दिवस पर संकल्प**)

13-1-2006 के पश्चात नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ एवं प्रश्न पुस्तिका प्राप्ति हेतु चन्द सम्पर्क सूत्रों की सूची

केन्द्र स्थल	नाम व पता	एसटीडी कोड	दूरभाष नम्बर कार्यालय	निवास	फैक्स/मोबा.
अजमेर	नेमीचन्दजी कटारिया 44-महावीर कॉलोनी पुष्कर रोड , अजमेर-305001	0145		2600397	
अलवर	श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता मेहता एण्ड कम्पनी, 17-मनु मार्ग, अलवर 301001	0144	2700268	2341948	98290-97728
उदयपुर	श्री राजेन्द्रमलजी कुम्भट राजमाया, 6ए/1, अम्बा माता स्कीम, उदयपुर 313001	0294	3099888 2561605	2431647	2412275 94141-56700
किशनगढ	श्री राजेन्द्र कुमारजी डांगी ओसवाली मौहल्ला, पो. मदनगंज -किशनगढ़ 342801 (जि.अजमेर)	01463	250045	243086	94140-12286
कोटा	श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन वर्द्धमान नमकिन्स, गुमानपुरा, मेन रोड़, कोटा 324001	0744	2391759	2382832	94141-77139
जयपुर	श्री प्रेमचन्दजी जैन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर 302003	0141	2565997	2212982	
	श्री सुरेशचन्दजी कोठारी 18-अचरोल ऊस, सिविल लाईन्स, जयपुर 302006	0141	2222810	2222307	93145-01627
जोधपुर	श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ , घोड़ों का चौक, जोधपुर	0291	2624891	2621454	94141-26279 2636763
पाली	श्री ताराचन्दजी सिंघवी 7-गांधी कटला, पाली 306401	02932	221271	222005	
पीपाड़	श्री सुमतिचन्दजी मेहता मैसर्स गजराजनेमीचन्द जैन, सदर बाजार, पोस्ट पीपाड़ शहर	02930	233069	233842	94147-26279
भरतपुर	श्री वीरेन्द्र कुमारजी जैन कोठारी भवन, जैन महारीर भवन के सामने, भरतपुर 321001	05644	223537	225931	9414023392 9414023895
ब्यावर	श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा 4-शिव विला, नया बास, ढाबा गली, ब्यावर 305901	01462		257162	

बालोतरा	श्री धर्मेशजी चौपड़ा द्वारा - शाह रुपकुमारजी मोहनकुमारजी चौपडा, कंसारों का बास, पोस्ट बालोतरा	02988	222437	220191	94147-56206
बीकानेर	श्री नवीनजी डागा 'सौभाग' सी-7, सार्दुलगंज, बीकानेर 334001	0151	2520797 2205797	3200797 2543797	2520797 98292-50797
मेड़तासिटी	श्री हस्तीमलजी डोसी डोसी ब्रादर्स, डी-3, कृषि मडी, मेड़ता सिटी 341510	01590	220181 220772 220014	220144 221015	94141-19152
सवाई माधोपुर	श्री राधेश्यामजी जैन मैसर्स आर.पी. साड़ीज पुराना खण्डार रोड़, सवाई माधोपुर	07462	233550	233140	
भीलवाड़ा	श्री कन्हैयालालजी जैन अग्रसेन मांगलिक भवन के पास, आजाद नगर, भीलवाड़ा	01482	246028	242812	
हिण्डौन सिटी	श्री मूलचन्दजी जैन ई-31, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी 322230 जिला करौली	07469	230982	230974	94143-64937
दिल्ली					
दिल्ली	श्री जिनेन्द्र कुमारजी जैन - एडवोकेट , 346-कूचा सेठ के सामने, दरिबाकलां, दिल्ली 06	011	23381677	23258748	93736-54157
महाराष्ट्र					
इचलकरंजी	श्री पारसमलजी चौपड़ा 6/157/158, न्यू क्लाथ मार्केट, पोस्ट इचलकरंजी 416115	0230	2432760	2432760	93260-19232
जलगांव	श्री रतनलालजी बाफना नयनतारा', सुभाष चौक, जलगांव 425001	0297	2225903 2223903	2222629 2222630	2227332
जलगांव	श्री हीरालालजी मण्डलेचा महावीर जैन शिक्षण संस्थान	01482	246028	242812	
धुलिया	श्री कांतिलालजी चौधरी 1886-कांति कॉम्पलेक्स, चौथी लाईन, धुलिया 424001	02562	234309	233994	233994 98231-72765
नागपुर	श्री महेन्द्रकुमारजी कटारिया मै. मोहनलाल महेन्द्र कुमार कटारिया, अनाज बाजार, इतवारी, नागपुर 440002	0712	2764715 2768859	2680176 2680081	98503-45615

पुणे	श्री पोपटलालजी ओस्तवाल 601/602, मार्केट यार्ड, गुलटेकडी, पुणे 411037	020	24271243 24271244	24218154 24213717	24271242 98230-81825
मुम्बई	श्री नरेन्द्रजी हीरावत 204-कृष्णा कुंज, एसबीरोड, माटुंगा (वेस्ट) मुम्बई 400016	022	24370713 56669707	24222025	98210-40899
मध्यप्रदेश					
इन्दौर	श्री विजयकुमारजी नाहर कम्बाइण्ड इंजीनयरिंग, प्रो.लि. 108, श्रीनगर मन, इन्दौर 452001	0731		2564184 2562205	256414 98206-56220
उज्जैन	श्री पारसमलजी चोरडिया पारस कला भवन, लखेरवाड़ी, बम्बाखाना, उज्जैन 450006	0734	2553791 2556630	2556747	
जबलपुर	श्री मदनलालजी जैन 1404-गोरखपुर बाजार,जबलपुर 482001 (म.प्र.)	0761	2623442	2408363 2414023	98270-65777 2625162
दुर्ग	श्री कन्हैयालालजी कटारिया कटारिया व्यापार केन्द्र, कहान काम्पलेक्स गवली पारा, दुर्ग -01	0788		2323913	
हरियाणा					
मंडी डबवाली	श्री सुमति चद जी जैन वर्धमान ऐजेन्सीज,पुरानी धान मंडी, एसबीबीजे बैंक के पास,	01668	222153	222153	94160-47153
उत्तर प्रदेश					
कानपुर	श्री मनमोहनजी बाफना प्रमोद दाल मिल, 112/109. पोखरपुर, लालबंगला, कानपुर	0512	2450494 2450842 2450491	2273073 2271473	2451346 92355-04711 98398-08842
गुजरात					
अहमदाबाद	श्री छोगालालजी बाघमार मै. हिन्दूमल बच्छराज 51, न्यू क्लाथ मार्केट, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद 38002	079	8101251		31010977
सूरत	श्री स्वरुपचन्दजी बाफना एं-414, इण्डिया टेक्सटाईल्स मार्केट, चौथी मंजिल, रिंग रोड,	0261	2325100	2652233 266998	98251-23836
तमिलनाडु					
चैन्नई	Sh. Bastimal Ji Chordia No. 7, General Muthiya Mudali, Street Sowcar Pet	044	25290176 25292169	26612091 26428841	98410-28841

चैन्नई	Sh. Goutamchandji Hundiwl, 4/29, Shandy Road, palavaram , Chennai	044	22641554 2341569	22640914	94443-88565 98401-12346
चैन्नई	Sh. Mahendraji Kankaria Mahendra Jewellers, 1000-1001, T.H. Road, Kaladi Pet, Chennai 600019	044	25991313 25959300	25993671 2559501	25994466 94440-51313
चैन्नई	Sh. Ashokji Kawad, Prithvi Exchange, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai 600008	044	28553185 28415434	26273165	28514959 9381041097
कर्नाटका					
बैंगलोर	Sh. Ganeshmalji Bhandari No. 13, 6th Cross, Triveni Road, Yeswantpur, Bangalore 560022	00	23371331	23374319	93412-12529
	Shri Yasiwantji Sankhola No. 7 Wood Street, Ashok Nagar, Bangalore 560025	080	25543932 25562501	22363329 22227293	9845014669
मैसूर	Sh. Vimalchandji Dhoka Ashok Textiles , 905य171, Sarvajanika Hostel Road, V. Puram,Mysore-570008	0821	2486754 486697	2484423	
सीमोगा	Shri Prakash Chandji Mehta M/s Laxmi Electrics & Pumps Behind S.N. Market Nehru Road, Shimoga Town 577202	08182	275430 271506	2275430	93433-70196
पश्चिम बंगाल					
कौलकाता	Sh. Madanroopchandji Bhandari , 18/71/1, Dover Lane, 2nd Floor Kolkata 29	033	2400792 2407009	24617854 24751854	2407009
हैदराबाद	Shi Kishoreji Chajjed Rajshree Banglres, 4-4-138/30, Shri Goipal Market, Sultan Bazar, Hyderabad 500095	040	24751908	24751744	94404-72783

आचार्य श्री हस्ती के चयनित वचन

- आचार का मूल विवेक है ।
- योग साधना का सबसे बडा विघ्न लोकैषणा है ।
- मानव स्वभाव की यह दुर्बलता है कि जब छूट मिलती है तो शिथिलता बढ़ती ही जाती है ।
- पैर में चुभे कांटे और फोड़े में पैदा हुए मवाद के बाहर निकलने पर जैसे शांति प्राप्त होती है, उसी प्रकार सच्चा साधक अपने दोष की आलोचना और प्रतिक्रमण करके ही शांति का अनुभव करता है।
- संसार में दुःख के दो कारण हैं - मोह और अज्ञान। सामायिक मोह को घटाने और स्वाध्याय अज्ञान को दूर करने का अमोघ उपाय है।
- जिस समाज को अपने इतिहास का ज्ञान नहीं, वह कभी भी सही दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता।
- चिकित्सक रोग का दुश्मन पर रोगी का मित्र होता है ।
- पाप कर्म करके धन अर्जन कर दान देने की अपेक्षा पापों से दूर रहना अच्छा है ।
- विरोध का विरोध और गाली का गाली से प्रतिकार करने पर संघर्ष बढ़ता है।
- संताप घटाने के लिए मनुष्य को अपनी आवश्यकताएं घटानी चाहिए।
- मरण सुधार के लिए जीवन सुधार और जीवन सुधार के लिए वृत्तियों का संयम करना आवश्यक है।
- आवेश में किया गया कार्य स्वपर हितकारी नही होता।
- आत्मोन्नति के लिए सत्संग की खुराक आवश्यक है।
- साधु-संत और भक्त गृहस्थ सफेद चादर के समान हैं, उनमें छोटा - मोटा दोष भी खटकता है।
- स्वाध्याय चित्त की स्थिरता व पवित्रता के लिए सर्वोत्तम उपाय है ।
- जिससे जड़ चेतन, आत्मा - परमात्मा व बंध मोक्ष का ज्ञान हो, उसे सम्यग् ज्ञान कहते हैं।
- इच्छा की बेल काटे बिना और समभाव लाये बिना सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अपेक्षाएँ

- ¤ यदि आप इस योजना के उद्देश्यों से सहमत हो तो इस प्रतियोगिता में स्वयं भाग लें तथा अपने सम्पर्क में आने वालों को इस प्रतियोगिता की जंानकारी दें तथा भाग लेने हेतु प्रेरणा दें। विशेषकर सामूहिक आयोजनों में समय-समय पर उपरोक्त जानकारी की घोषणा करवाने का लक्ष्य रखावें।
- ¤ आप के परिवार , संस्था, संगठन, प्रतिष्ठान, कारखानें आदि जिससे भी आप संबंधित हों, उन्हें नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं पढ़ने की प्रेरणा दें जिससे उनके संस्कारों के निर्माण में आप निमित्त बन सकें।
- ¤ आप अपने समीपवर्ती गांवों, नगर की पाठशालाओं , सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थानकों, छउपासरों, मंदिरों आदि पुस्तकालयों तक इस योजना संबंधी प्रचार सामग्री पहुंचाने में आपके अमूल्य, समय श्रम एवं साधनों का उपयोग हो।
- ¤ आप अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका उपलब्ध करवा इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु सम्यक् प्रेरणा करावें।
- ¤ आप प्रतियोगिाता में भाग लेने के इच्छुक स्वाध्याय प्रेमियों तक ग्रन्थ एवं प्रश्न पुस्तिका उपलब्ध करवा पहुंचाने में सहयोग करें।
- ¤ यदि आपने ग्रन्थ एवं प्रश्न पुस्तिका विक्रय का दायित्व लिया है तो आस पास के अपने अपने क्षेत्र में ऐसे अन्य वितरण केन्द्र खोलें ताकि आपसे सम्पर्क करने वालों को जानकारी दे सकें। ताकि जन जन तक ग्रन्थ और प्रश्न पुस्तिकाएं सहज उपलब्ध करायी जा सके।
- ¤ आपके यहां से प्रकाशित समाचार पत्रों में इस प्रतियोगिता संबंधी जानकारी प्रकाशित करने का लक्ष्य रखावें।

संरक्षक एवं मार्गदर्शक मण्डल

1. श्री मोफतराजजी मुणोत–मुम्बई
(संयोजक –रत्नसंघ संरक्षक मण्डल)
2. श्री रतनलालजी बाफना–जलगांव
(संयोजक –रत्नसंघीय शासन सेवा समिति)
3. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत–मुम्बई
(अध्यक्ष भारतीय श्री जैन रत्न हितेषी श्रावक संघ)
4. श्री गुमानमलजी चोरडिया–जयपुर
(तपस्वी साधक एवं पूर्वाध्यक्ष अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)
5. डॉ. लक्ष्मीमलजी सिंघवी–दिल्ली
(प्रख्यात विधिवेता, ब्रिटेन के पूर्व उच्चायुक्त, पूर्व सांसद)
6. श्री देवेन्द्रराजजी मेहता–जयपुर
(भगवान महावीर विकलांग समिति के निदेशक एवं पूर्व चेयरमेन सेबी)
7. श्री सुरेशदादा जैन–जलगांव
(महाराष्ट्र शासन के पूर्व मंत्री, विधायक जलगांव विधानसभा क्षेत्र)
8. श्री नवरतनमलजी कोठारी–जयपुर
(प्रबन्ध ट्रस्टी, भगवान महावीर कैंसर हॉस्पीटल,)
9. श्री भंवरलाल जी कोठारी
(अध्यक्ष राजस्थान गो सेवा आयोग, प्रबुद्ध चिन्तक, सेवाभावी सुश्रावक)
10. श्री प्रेमचंद कोठारी–बूंदी
(सुज्ञ एवं साधनाशील श्रावक)
11. श्री सुभाषजी ओस्तवाल
(उपाध्यक्ष श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस, दिल्ली)

पुरुषों में हस्ती की समानता नहीं। समाज में मैंने तीन रत्न पाए– श्री आत्मारामजी महाराज, श्री समर्थमल जी महाराज और मेरे पास बैठे श्री हस्तीमलजी महाराज। पुरुषों मे गंध हस्ती ही ग्राह्य है जिनके प्रताप से दूसरे गज भाग जाते हैं, सामना करने की और खड़े रहने की भी उनकी ताकत नहीं। इन हस्तीमह जी को मैंने आज देखा है। पहले सुना करता था कि मारवाड़ मैं ऐसा तेजस्वी साधु है। उन्हें मैं क्या कहूं? जोधपुर का राजा कहूं या नवकोटि मारवाड़ का सरताज।

(आगम टीकाकार पूज्य श्री घासीलाल जी म.सा. द्वारा आचार्य श्री हस्ती म.सा. के अहमदाबाद में अप्रेल 1966 में पदार्पण पर अभिव्यक्त भाव।

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ पर आयोजित प्रतियोगिता पर वरीयता क्रमानुसार विविध पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार	1,00,000 रू.	द्वितीय पुरस्कार	31,000 रू.
तृतीय पुरस्कार	21,000 रू.	चतुर्थ पुरस्कार	15,000 रू.
पंचम पुरस्कार	11,000 रू.	षष्ठम पुरस्कार	7,000 रू.
सप्तम पुरस्कार	5,000 रू.	अष्टम पुरस्कार	3,000 रू.
नवम पुरस्कार	2000 रू.	100 अन्य पुरस्कार (प्रत्येक)	1000 रू.

नोट :

1. 550 से कम अंक प्राप्त करने वालों को वरीयता में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।
2. 500 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रत्येक प्रतियोगी जो 5.11.2006 के पहले उत्तर पुस्तिका प्रधान कार्यालय में जमा करवा देंगे उन्हें 50 रू. का शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।

विशेष :

1. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले के लिए पुस्तक का मूल्य 100 रू.मात्र व डाक द्वारा भेजने पर 160 रू. मात्र।
2. प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 30 रू. मात्र डाक द्वारा 40 रू.।

मेरी भावना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का, व्यवहार बारम्बार हो॥
धर्म के विस्तार से, संसार का उद्धार हो।
पाप का परित्याग हो, और पुण्य का संचार हो॥
ज्ञान की सद्ज्योति से, अज्ञान तम का नाश हो।
धर्म के सद् आचरण से, शान्ति का आभास हो॥
शान्ति सुख आनन्द का, प्रत्येक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो॥
रोग भय और शोक होवे, दूर है परमात्मा।
ज्योति से परिपूर्ण होवे, सब जगत की आत्मा॥

श्रीमती कमला बुथनी W/o श्री ...चन्दजी
बुथनी पता:- ई-19 यू आई टी
कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर

PRINTED BOOK



संयोजक **आचार्य हस्ती जीवन दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता**

C/O श्री अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर 342001